



दक्षिणामूर्ति शिव साधना परिषद  
सत्यम नगर, सामने घाट, लंका ,वाराणसी  
221005

दक्षिणामूर्ति शिव कथा



त्वमेव माता च पिता त्वमेव,  
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।  
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,  
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥



आज हम अनेक गुरु-शिष्य परंपराओं को देखते हैं, जो बहुत लंबे समय से चली आ रही हैं। कोई 50 वर्षों से, तो कोई 100 वर्षों से, तो कोई उससे भी अधिक वर्षों से चली आ रही है।

परंतु क्या आपने कभी यह सोचा है कि इस गुरु-शिष्य परंपरा की शुरुआत कब हुई थी?

कहाँ हुई थी?

किस प्रकार हुई?

सबसे पहले गुरु कौन थे?

सबसे पहले शिष्य कौन थे?

क्या कभी आपने इन सबके बारे में सोचा है?

सबसे पहले हम जानेंगे कि इस ब्रह्मांड में गुरु-शिष्य परंपरा की शुरुआत कब और कैसे हुई।

फिर जानेंगे कि यह परंपरा कैसे आगे बढ़ी और विभिन्न संप्रदायों तक पहुँची।

आज के समय में गुरु-शिष्य परंपरा की क्या स्थिति है?

और भविष्य में इस परंपरा में क्या बदलाव आ सकते हैं?



आज से अरबों वर्ष पूर्व..जब ब्रह्माजी सृष्टि रचना कर रहे थे तो उन्होंने सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार चार मानस पुत्रों को उत्पन्न किया।

जैसा आप जानते हैं कि नारदजी भी ब्रह्माजी के मानस पुत्र हैं। जो मन द्वारा सोचने मात्र से उत्पन्न हो वो मानस पुत्र कहे जाते हैं।

तो मन के द्वारा उत्पन्न अपने चारों पुत्रों सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार से ब्रह्माजी ने कहा कि आप लोग सृष्टि रचना करने में मेरी मदद करें। तब चारों भाइयों ने कहा कि पिताश्री के चरणों में बारम्बार प्रणाम करते हैं, किन्तु हम लोग ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं कि हमलोग कौन हैं? कहाँ से आये हैं? इत्यादि... तो ब्रह्मा जी ने कहा कि आप लोग सत् का ज्ञान चाहते हैं किन्तु इस समय यह ज्ञान नहीं दे सकूँगा। तब चारों भाइयों ने अल्प आयु में ही ज्ञान की खोज में ब्रह्मलोक का त्याग कर दिया। उनकी यह खोज दीर्घकाल तक चलती रही। अन्ततः जब उन्हें गुरु की प्राप्ति हुई तो वे वृद्ध हो चुके थे।

इसी क्रम में चारों ब्रह्मकुमार विष्णुजी के निकट गये और ज्ञान देने के लिए विनती की। भगवान विष्णु ने कहा की ब्रह्मा जी जो सृष्टि रचना कर रहे है, उसका पालन हमें ही करना है, इसलिए अभी हम ज्ञान नहीं दे पायेंगे।

वे अन्त में भगवान शिव के पास कैलाश पर्वत पर पहुंचे।

अजन्मा शिव स्वभावतः युवा है। शिवजी उस समय समाधि में



थे, ये चारों भाई उनसे भी ज्ञान देने के लिए विनती करते हैं, परन्तु शिवजी समाधि में होने के कारण उनकी बात पर ध्यान नहीं देते हैं।

फिर ये लोग उत्तर दिशा के तरफ बढ़ते हैं। इधर जब शिवजी की समाधि टूटती है तो उन्हें ध्यान आता है कि चार बालक मेरे पास ज्ञान प्राप्त करने के लिए आये थे। शिवजी उसी रास्ते पर कुछ दूर आगे बरगद पेड़ के नीचे चिन्मुद्रा में बैठ जाते हैं, जिस रास्ते से सनत, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार आगे बढ़ रहे थे। जब ये लोग शिवजी को देखते हैं तो उनसे ज्ञान के लिए प्रार्थना करते हैं तो दक्षिणामूर्ति शिव के रूप में बैठे शिव जी बिना बोले उनके मन में उत्तर देते हैं - बैठ जाओ...

ये चारों भाई बैठ जाते हैं और फिर दक्षिणामूर्ति शिव उन्हें ज्ञान देना प्रारम्भ करते हैं।

गुरुदेव दक्षिणामूर्ति शिव बिना बोले मानसिक रूप से उन्हें ज्ञान देते हैं।

"मौनव्याख्या प्रकटित परब्रह्मतत्त्वं युवानं। वर्षिष्ठान्ते वसद्  
ऋषिगणैः आवृतं ब्रह्मनिष्ठैः॥

आचार्येन्द्र करकलित चिन्मुद्रमानन्दरूपं। स्वात्मारामं मुदितवदनं  
दक्षिणामूर्तिमीडे॥"



**अर्थ-** दक्षिणामूर्ति शिव मौन (चुप रहकर) ही परम सत्य का ज्ञान प्रकट कर देते हैं। वे स्वयं सदैव युवा स्वरूप हैं, परम गुरु हैं, और वटवृक्ष के नीचे बैठे हुए परम ज्ञानी तथा वृद्ध ऋषि-मुनियों से घिरे हैं। अपने हाथ में चिन्मुद्रा (ज्ञान की मुद्रा) धारण किए हुए, वे स्वयं आनंद में मग्न रहते हैं और उनका चेहरा हमेशा प्रसन्नता से मुस्कुराते रहते है।

**परंपरा कैसे आगे बढ़ी-**दक्षिणामूर्ति शिव ब्रह्माण्ड के आदि गुरु है, और फिर यहाँ से गुरु परम्परा शुरू होती है।

यहाँ से हमारे ऋषि - महर्षि दक्षिणामूर्ति शिव से या इन चारों महात्माओं से दीक्षा लेकर ज्ञान प्राप्त करते हैं, ऐसे गुरु परम्परा आगे बढ़ती है।

स्वयं आदि गुरु शंकराचार्य जी(जिन्होंने भारत में चार प्रमुख मठों की स्थापना की) उन्होंने भी दक्षिणामूर्ति शिव को अपना गुरु बनाया था।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, गुरु-शिष्य परंपरा आगे बढ़ती गई और विभिन्न संप्रदायों में विभाजित होती गई। इन संप्रदायों से अनेक महान गुरु हुए, जो महान तपस्वी और महायोगी थे।

कुछ स्थानों पर जैसे-जैसे ज्ञान की प्राप्ति होती गई और उन्होंने



अनेक उपलब्धियाँ हासिल कीं, उनके भीतर अभिमान आने लगा। परिणामस्वरूप, जो गुरु-शिष्य परंपरा सदियों से चली आ रही थी, उसमें उन्होंने धीरे-धीरे बदलाव करना शुरू कर दिया।

## आज के समय में गुरु-शिष्य परंपरा की क्या स्थिति है?

जिसके कारण पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा से धीरे-धीरे भटकाव आने लगा। समय के साथ यह भटकाव इतना बढ़ गया कि आज(कलयुग में)गुरु-शिष्य परंपरा लगभग नष्ट होने की स्थिति में पहुँच गई है। या यूँ कहें कि बहुत हद तक नष्ट हो चुकी है।

जगत के कल्याण के लिए या यूँ कहें की अपने भावी शिष्यों की गुरुदेव दक्षिणामूर्ति को इतना चिंता थी कि उनके कल्याण के लिए अरबों वर्ष पहले ही उन्होंने दक्षिणामूर्ति शैव परम्परा की शुरुआत कर दी थी ।

ये हमारा दुर्भाग्य है कि जन्म पर जन्म बीत गए पर गुरुदेव को पकड़ नहीं पाए की मोक्ष प्राप्त हो जाएं ।



जब घर में संकट आएगा, तो घर के मुखिया पर उसका दबाव आएगा। इसी प्रकार, किसी संस्था या विद्यालय में कोई समस्या उत्पन्न होगी, तो वहाँ के प्रधानाचार्य, उच्च अधिकारी या प्रमुख पर उसे ठीक करने की जिम्मेदारी होगी।

इसी प्रकार, जब गुरु-शिष्य परंपरा पर संकट आ चुका है और यह परंपरा धीरे-धीरे नष्ट होती जा रही है, तो इसका भार स्वयं आदिगुरु, इस ब्रह्मांड के प्रथम गुरु—दक्षिणामूर्ति शिव—पर आया।

कलियुग के इस कठिन समय को देखते हुए, आदिगुरु दक्षिणामूर्ति शिव स्वयं गुरु-शिष्य परंपरा को पुनः उसी पारंपरिक रूप में स्थापित करना चाहते हैं।

वे चाहते हैं कि पूरे विश्व में यह गुरु-शिष्य परंपरा पुनः स्थापित हो और अपने मूल स्वरूप में आगे बढ़े।

आने वाले कलियुग में दक्षिणामूर्ति शिव गुरुदेव स्वयं इस गुरु-शिष्य परंपरा को कलियुग के अंत तक आगे बढ़ाना चाहते हैं। हर मनुष्य को भौतिक और अध्यात्मिक सुख और ज्ञान प्रदान करते हुए सभी मनुष्य को मोक्ष का मार्ग दिखाएंगे।

जय दक्षिणामूर्ति शिव गुरुदेव 🌹 🙏

For more information on spiritual content follow our channel and page -tap on icon/link:

अध्यात्म से जुड़ी अधिक जानकारी के लिए icon/link पर क्लिक करें और चैनल को फॉलो करें।

CLICK HERE



YouTube

<https://m.youtube.com/@ShriDakshinaMurtiShivSadhanaPa>



<https://whatsapp.com/channel/0029VazNzZhEquiGjJjCVV17>



[https://www.instagram.com/dakshinamurtishiv?utm\\_source=wa4a&utm\\_campaign=wa\\_vpl\\_m2\\_uvfvweb](https://www.instagram.com/dakshinamurtishiv?utm_source=wa4a&utm_campaign=wa_vpl_m2_uvfvweb)



<https://www.facebook.com/sanjay.towardhimaharaj/>



<https://t.me/dakshinamurtishiv>

जो महानुभाव कुछ दिन या आजीवन रहकर ज्योतिष, ध्यान इत्यादि विभिन्न प्रकार की साधनाएं सीखना चाहते हैं या परिवार से दूर भगवान की भक्ति में जीवन बिताना चाहते हैं, उनके लिए रहना-खाना निःशुल्क है।

सम्पर्क करें:-

ज्योतिषाचार्य संजय तिवारी जी महाराज

दक्षिणामूर्ति शिव साधना परिषद,

सत्यम नगर, सामने घाट, लंका, वाराणसी 221005

मोबाइल: 8887813241

8660820545

जो लोग गुरुदेव दक्षिणामूर्ति शिव से दीक्षा लेना चाहते हैं, वे सभी संपर्क कर सकते हैं।

Dakshinamurti Shiv Sadhana Parishad Varanasi

Dakshinamurti Shiv Sadhana Parishad Varanasi